उपकार

हिन्दी व्याकरण

सभी प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु

लेखक

डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी
डी. लिट्.

संशोधन एवं परिवर्धन

डॉ. दिलीप पाण्डेय
डी. फिल्.

उपकार प्रकाशन, आगरा

Introducing Direct Shopping

Now you can purchase from our vast range of books and magazines at your convenience :

- Pay by Credit Card/Debit Card or Net Banking facility on our website *www.upkar.in* *OR*
- Send Money Order/Demand Draft of the print price of the book favouring 'Upkar Prakashan' payable at Agra. In case you do not know the price of the book, please send Money Order/Demand Draft of ₹ 100/- and we will send the books by VPP (Cash on delivery).

(Postage charges FREE for purchases above ₹ 100/-. For orders below ₹ 100/-, ₹ 20/- will be charged extra as postage)

© प्रकाशक

प्रकाशक

उपकार प्रकाशन

हैड ऑफिस : 1 स्टेट बैंक कॉलोनी, निकट खन्दारी, आगरा-मथुरा बाई-पास, **आगरा**–282 005

रजि. ऑफिस : 2/11 ए, स्वदेशी बीमा नगर (शाह सिनेमा के सामने), **आगरा**–282 002

फोन : 2530966, 2531101

E-mail : care@upkar.in, **Website :** www.upkar.in

ब्रांच ऑफिस :

4845, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002
फोन : 011–23251844, 43259035

पारस भवन (प्रथम तल), खजांची रोड, पटना–800 004
फोन : 0612-2303340

16-11-23/37, मूसारामबाग, टीगन गुडा आर.टी.ए. ऑफिस के सामने मेन रोड (यूनियन बैंक के बगल में), हैदराबाद–500 036 (तेलंगाना)
फोन : 040–24557283

8-310/1, ए. के. हाउस, हीरानगर, हल्द्वानी, जिला–नैनीताल–263 139 (उत्तराखण्ड)
मोबा. : 7060421008

- *इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी त्रुटि के लिए प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा.*
- *इस पुस्तक को अथवा इसके किसी अंश को बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के, किसी भी रूप–फोटोग्राफी, विद्युत-ग्राफिक, यान्त्रिकी अथवा अन्य रूप में किसी भी प्रकार से उपयोग के लिए नहीं छापा जा सकता है.*
- *किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र केवल आगरा ही होगा.*

ISBN : 978-81-7482-782-1

Code No. 225

मुद्रक : उपकार प्रकाशन (प्रिंटिंग यूनिट) बाई-पास, आगरा

अपनी बात

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है. संविधान में वह राजभाषा के रूप में भी स्वीकृत है. प्रायः समस्त प्रतियोगिता परीक्षाओं में हिन्दी भाषा के ज्ञान को अनिवार्य माना गया है. प्राथमिक कक्षाओं से लेकर विश्वविद्यालयीय स्तर के पाठ्यक्रमों में हिन्दी भाषा को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है. इस परिप्रेक्ष्य में यह बताने की आवश्यकता नहीं रह जाती है कि हिन्दी भाषा सम्बन्धी सम्यक् ज्ञानार्जन के लिए हिन्दी-व्याकरण का ज्ञान कितना महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है.

बाजार में हिन्दी-व्याकरण की अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं. प्रत्येक पुस्तक में मुझे कुछ न कुछ कमी दिखाई दी. उन कमियों को दूर करके हिन्दी का सर्वांगीण व्याकरण प्रस्तुत करने के विचार से प्रस्तुत व्याकरण लिखा गया है. इस पुस्तक में हिन्दी भाषा व्याकरण व रचना के समस्त अंगों का विवेचन किया गया है. आरम्भ में दी हुई विषय-सूची को पढ़कर पाठक इस पुस्तक की सर्वांगीणता के प्रति सहज ही आश्वस्त हो जाने चाहिए.

इस पुस्तक को लिखने में मैंने बाजार में उपलब्ध व्याकरण की प्रायः समस्त पुस्तकें देखी हैं और उनसे लाभान्वित होने का प्रयत्न किया है. श्री कामता प्रसाद गुरु प्रणीत हिन्दी-व्याकरण तथा रूसी विद्वान डॉ. जाल्मन दीमशित्स द्वारा लिखित हिन्दी-व्याकरण से मैंने विशेष सहायता ली है. इन दोनों मनीषियों के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ.

विवादग्रस्त विषयों का विवेचन करना मैंने आवश्यक नहीं समझा, क्योंकि इससे पुस्तक का आकार बढ़ जाता तथा पाठकों को विषय को स्पष्ट रूप से समझने में कठिनाई होने की सम्भावना बनी रहती.

विषय का विवेचन करते समय मैंने प्रचलित उदाहरण उद्धृत किए हैं, जिससे पाठक मेरी बात को सरलता से समझ सकें.

मुझे विश्वास है कि हमारे सुधी पाठक प्रस्तुत व्याकरण द्वारा लाभान्वित होंगे और हिन्दी भाषा की शुद्ध रचना करने में उन्हें अपेक्षित सहायता प्राप्त होगी.

—डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी

विषय-सूची

- व्याकरण विषय-प्रवेश 3–11

1. हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि 12–23
2. वर्ण विचार 24–29
3. शब्द भाषा और ध्वनि 30–35
4. संज्ञा 36–38
5. सर्वनाम 39–42
6. विशेषण 43–47
7. क्रिया और काल 48–53
8. अव्यय और क्रिया विशेषण 54–59
9. निपात 60–63
10. लिंग, वचन, कारक 64–79
11. उपसर्ग, प्रत्यय और परसर्ग 80–102
12. संधि 103–106
13. समास 107–109
14. लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे 110–123
15. विराम चिह्न 124–126
16. शुद्ध हिन्दी लेखन 127–133
17. वाक्य विन्यास 134–143
18. पर्यायवाची एवं विलोम शब्द 144–147
19. समान उच्चारण वाले भिन्नार्थक शब्द 148–154
20. समानार्थी शब्द एवं प्रयोग के आधार पर उनमें भेद 155–160
21. अनेक शब्दों (वाक्यांश) की जगह एक शब्द का प्रयोग 161–165
22. अपठित पद्यांश 166–168
23. संक्षेपण 169–175
24. पल्लवन अथवा भाव-निस्तारण 176–181
25. रस परिचय 182–184
26. अलंकार 185–193
27. छंद 194–200
28. काव्य-गुण और काव्य-दोष 201–203
29. पारिभाषिक शब्दावली 204–207
30. प्रशासनिक शब्दावली 208–215